राज कॉमिक्स

मूल्य 8.00 संख्या 1024

भोकालकाकाल

NAG RAJ ACTION YEAR

Malti

भौकाल. वह पराक्रमी जिसे सारा ब्रह्माण्ड महाबली के नाम से जानता है, जिसने विश्व के बड़े-बड़े महारथियों के छक्के छुड़ाये हैं, आज खुद किसी साधारण मनुष्य की तरह परास्त होकर जमीन पर पड़ा है!

भौकाल. वह बलशाली जिसके एक ही प्रहार से चट्टानें तक चकनाचूर हो जाती हैं। आज खुद गेहूं के बोरे की तरह ढेर हो गया है उस शक्ति के एक ही प्रहार से जो बनकर आई है...

- लेखक. संजय गुप्ता.
- सम्पादक. मनीष गुप्ता.
- चित्रांकन. कदम स्टुडियो.

भौकाल का काल

और जिसका नाम है-

भीम! द्वापर युग का महान योद्धा! महाभारत को जीत लेने वाला भीम!

नहीं! मैं भीम नहीं!

© RAJA POCKET BOOKS

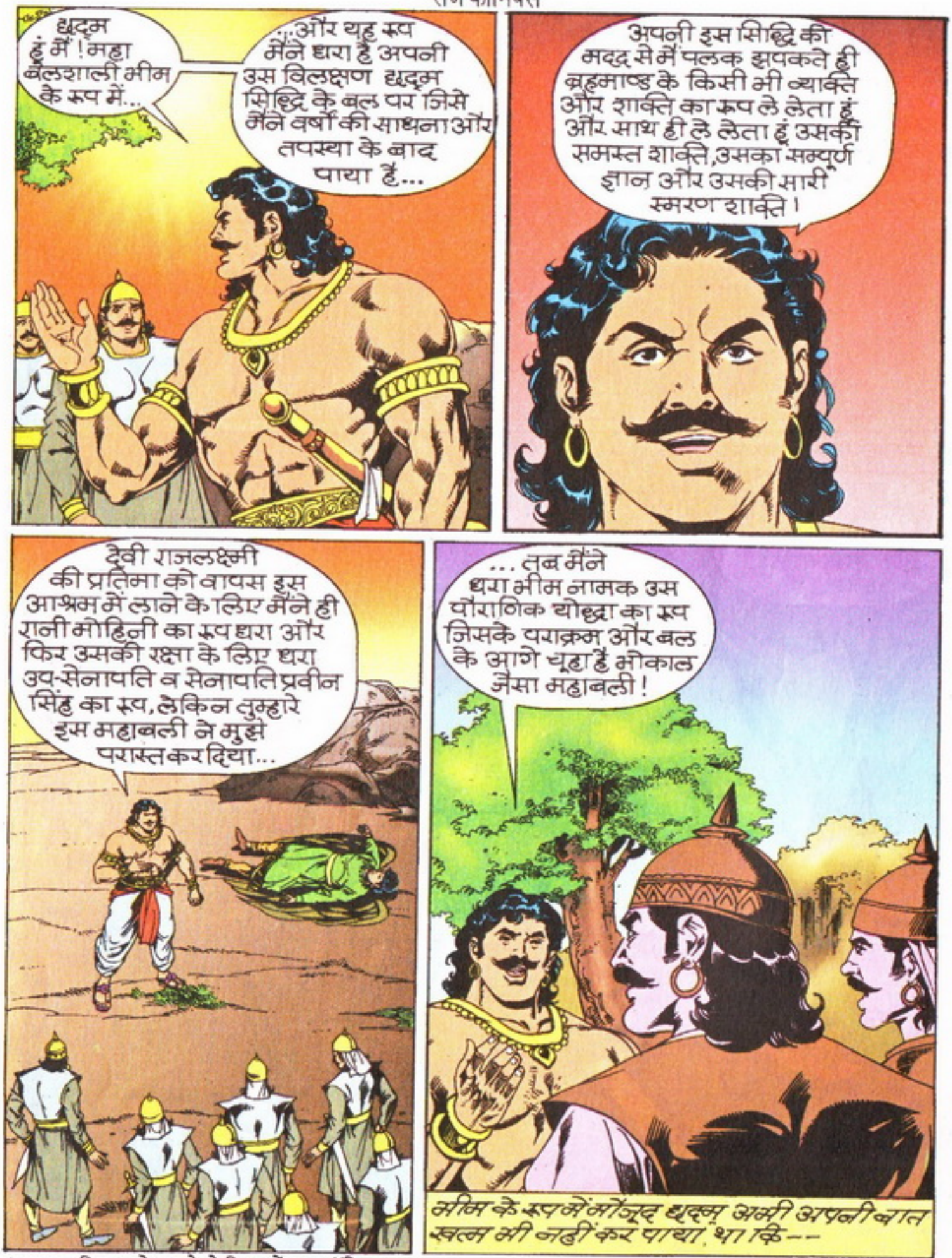
छद्म हूं मैं ! महा बलशाली भीम के रूप में...
...और यह रूप मैंने धारा है अपनी उस विलक्षण छद्म सिद्धि के बल पर जिसे मैंने वर्षों की साधना और तपस्या के बाद पाया है...
अपनी इस सिद्धि की मदद से मैं पलक झपकते ही ब्रह्माण्ड के किसी भी व्यक्ति और शक्ति का रूप ले लेता हूं और साथ ही ले लेता हूं उसकी समस्त शक्ति, उसका सम्पूर्ण ज्ञान और उसकी सारी स्मरण शक्ति !
देवी राजलक्ष्मी की प्रतिमा को वापस इस आश्रम में लाने के लिए मैंने ही रानी मोहिनी का रूप धारा और फिर उसकी रक्षा के लिए धारा उप-सेनापति व सेनापति प्रवीन सिंह का रूप, लेकिन तुम्हारे इस महाबली ने मुझे परास्त कर दिया...
... तब मैंने धारा भीम नामक उस पौराणिक योद्धा का रूप जिसके पराक्रम और बल के आगे चूहा है भोकाल जैसा महाबली !
भीम के रूप में मौजूद छद्म अभी अपनी बात खत्म भी नहीं कर पाया था कि--

★यह सब विस्तार से जानने के लिए पढ़ें: इस कॉमिक का प्रथम भाग छद्म

मानो भूचाल आ गया, मेघ फट पड़े-
अन्याय और पाप का पक्ष लेने अगर महाबलशाली भीम की शक्ति भी आई है तो...
...भोकाल उससे भी टकरायेगा!
धड़ाक
मैं तो समझा था तुझे समाप्त करने के लिए एक ही प्रहार काफी था परन्तु तूने अपने पैरों पर खड़े होकर और प्रत्युत्तर में वार करके मुझे यह बता दिया कि...
ओफ्फ!
धड़ाक
...तुझे समाप्त करने के लिए मुझे थोड़ा परिश्रम करना होगा!
ओफ्फ! यह शक्तिशाली प्रहार अगर मुझ पर हो गया होता तो मेरी दशा भी इस पेड़ की तरह हो गई होती!
कड़ाक

वारों की तेजी के साथ मुकाबला भी तेज हो रहा था-

लेकिन वह मुकाबला बराबरी का नहीं था। यह बात वहां खड़े दर्शक भी जानते थे...

...और मोकाल भी-

चट्टान खील-खील होकर बिखर गई-

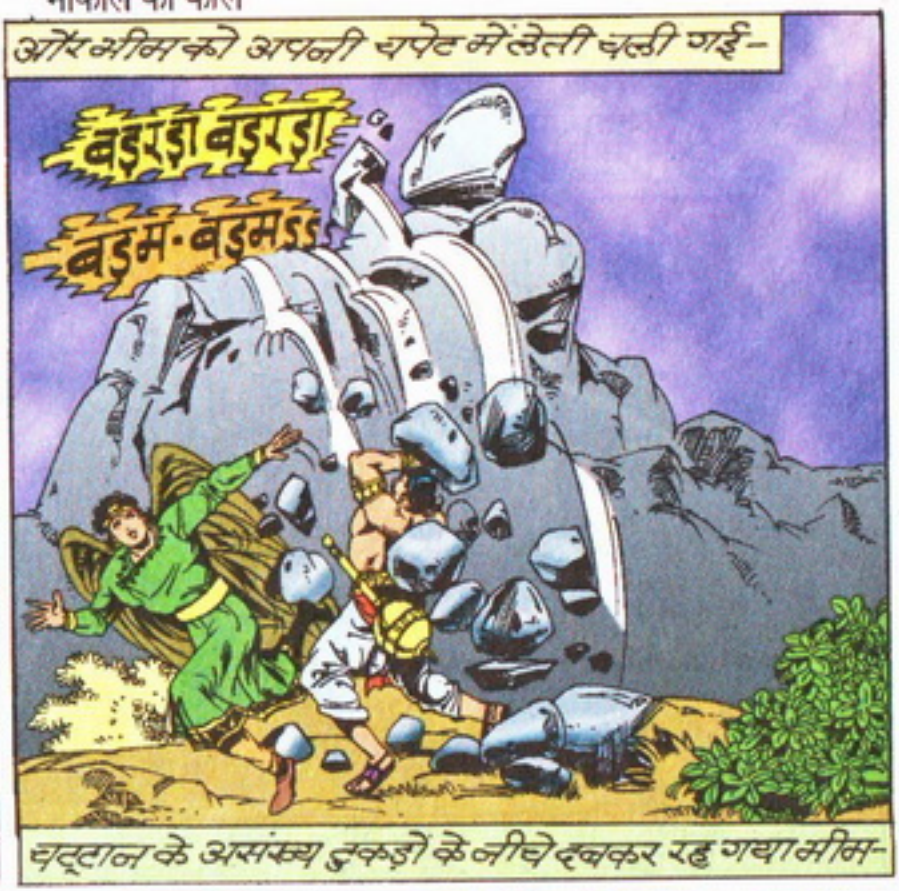

चट्टान के असंख्य टुकड़ों के नीचे दबकर रह गया भीम-

...लेकिन तूने अपनी गदा का प्रयोग करके मुझे भी अस्त्र उठाने के लिए विवश कर दिया है...

...और महाभारत काल में शत्रुओं में प्रलय मचा देने वाली इस गदा का सामना मेरी वह तलवार ही कर सकती है जिसे मुझे प्रदान करते हैं महागुरू...

भेऽऽ कऽऽ लेऽऽ

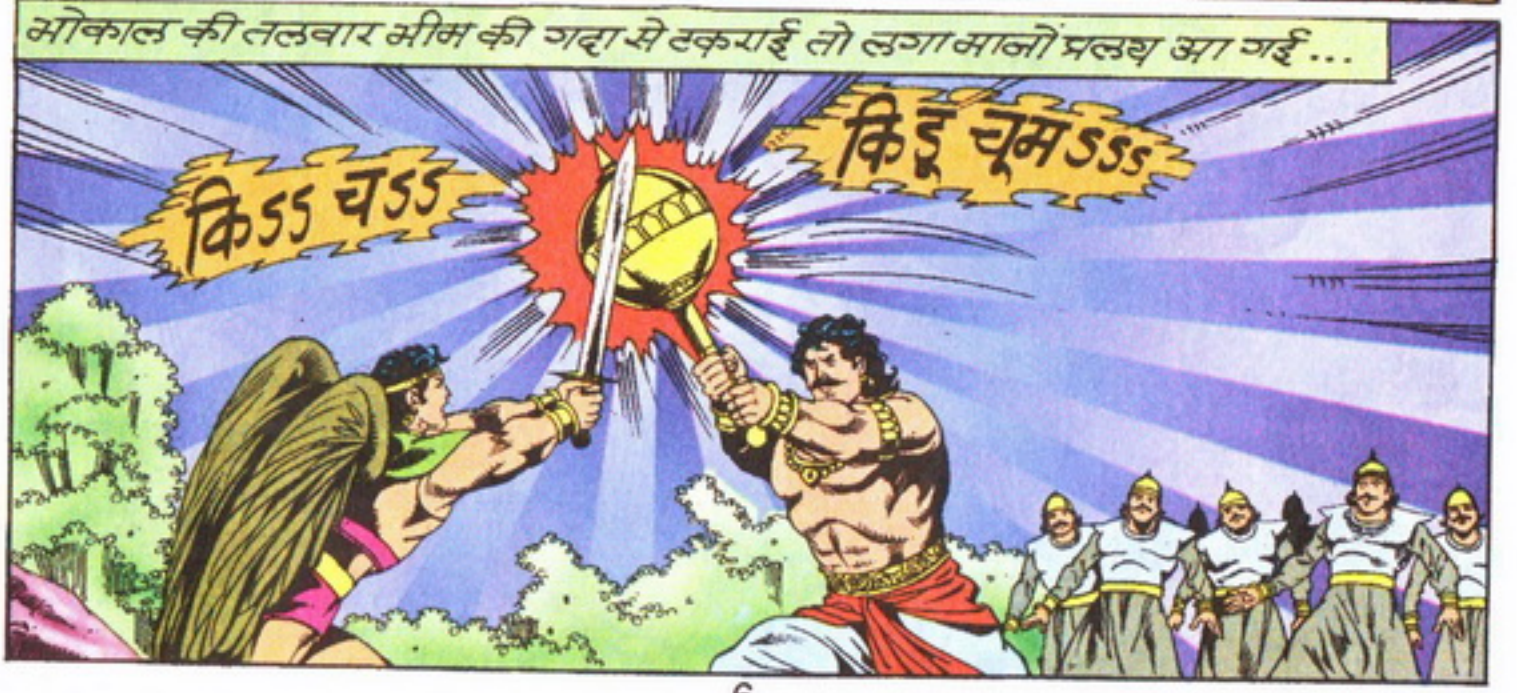
भोकाल की तलवार भीम की गदा से टकराई तो लगा मानो प्रलय आ गई...
किऽऽ चऽऽ
किइ चूमऽऽऽ

...ज्वालामुखी फट पड़ा-

वड़ाकूम

और उस समय तो मानो सब कुछ शांत हो गया जब-

भोकाल के एक प्रचण्ड वार से भीम के हाथों से गदा को छिटका दिया-

टनाक

सभी जड़ होकर रह गये थे क्योंकि...

... चमत्कार से कम नहीं थी वह घटना-

भीम के रूप में और उसकी प्रलयंकारी शक्ति व बल के होते हुए भी मेरे हाथों तेरी यह पराजय इस बात का प्रमाण है, हृदम् कि ब्रह्माण्ड की जो भी शक्ति अन्याय और पाप का साथ देती है उसे...

...न्याय और पुण्य के आगे ऐसे ही पराजित होना पड़ता है!

सत्य और न्याय का साथ देने के कारण ही द्वापर युग में भीम अपराजित था!

अब बोल अपना जीवन देगा या देवी राजलक्ष्मी की प्रतिमा !

प्राण गंवाने की बजाये-

राजलक्ष्मी की मूर्ति गंवाना ज्यादा उचित समझा ह्रदम ने-

मोकाल को मूर्ति मिल चुकी थी -

अब उसके लिए वहां ठहरना बेकार था-

अब कल हम राजलक्ष्मी पर्व पर राजधानी में देवी की प्रतिमा का अभिषेक कर सकेंगे !

नहीं। कल पर्व के दिन देवी राजलक्ष्मी का अभिषेक राजधानी में नहीं हमारे आश्रम में ही होगा।...

...अगर ऐसा नहीं हुआ तो गुरूमाता मुझे कभी क्षमा नहीं करेगी !
उन्हें दिया अपना वचन मैं कभी पूरा नहीं कर पाऊंगा !
ज्वालामुखी के लावे की भांति दहक रही थी ब्रह्म की आंखें-
और उसके साथ तेजी से एक नया रूप धरने की तैयारी में जुट गये !
इधर-
अपने घोड़ों को और तेज दौड़ाओ ! हमें सांझ होने से पहले ही राजधानी पहुंचना है !
तुम्हारे जीवन में अब एक ही सांझ आयेगी भोकाल ...

...और वो मृत्यु की सांझ होगी!

कड़ककड़ड़ड़

कौन था वह शख्स? जिसके एक ही मुष्टि प्रहार ने उस बड़ी चट्टान के परखच्चे उड़ा दिये!...

...और उसे मोकाल की राहों में बिछा दिया-

ओह ये क्या? आगे का सारा रास्ता तो पहाड़ी चट्टानों से पूरी तरह बंद है।

अब क्या होगा महाबली! इस रास्ते को साफ करने में तो हमें काफी समय लग जायेगा।

ठीक कहा सेनापति, लेकिन चिन्ता की बात नहीं है! हम राजधानी समय पर ही पहुंचेंगे! क्योंकि काफी समय के कार्य को चुटकियों में पूरा करेगा...

...प्रहारा!

मोकाल के मस्तक पर सुशोभित प्रहारा से निकली वे किरणें...

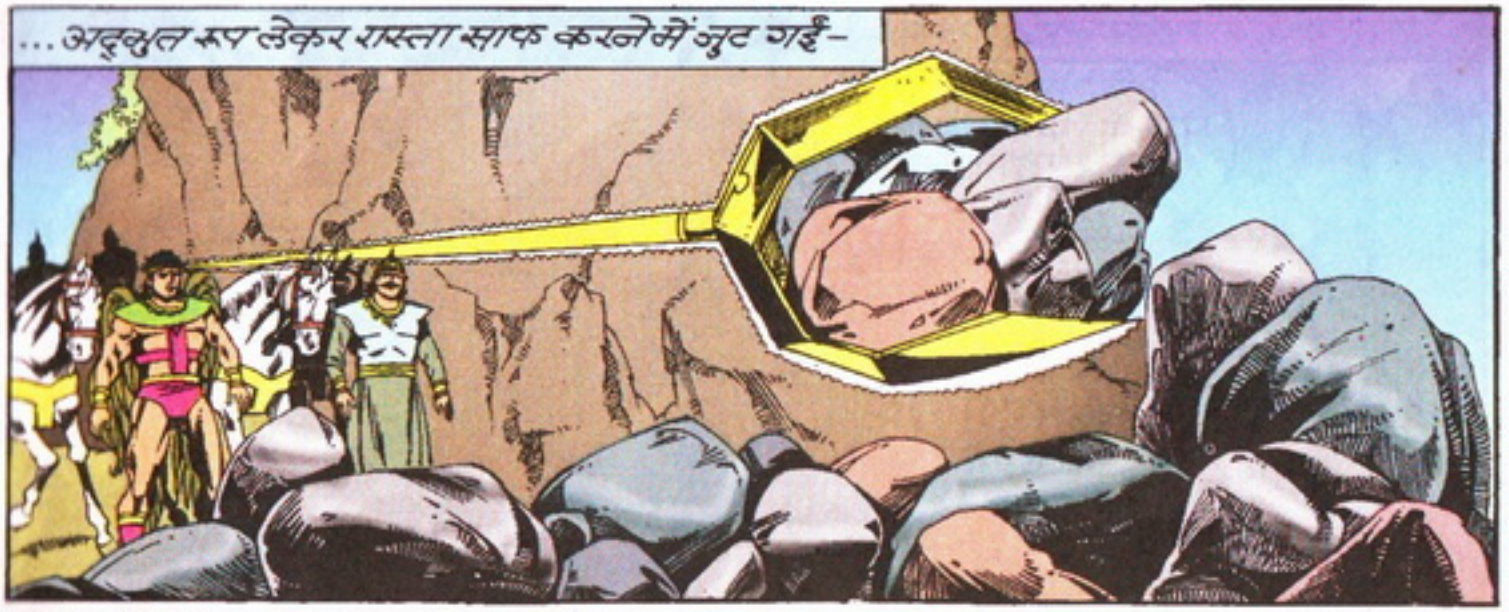
...अद्भुत रूप लेकर रास्ता साफ करने में जुट गईं-

कुछ पलों में ही रास्ता साफ था-

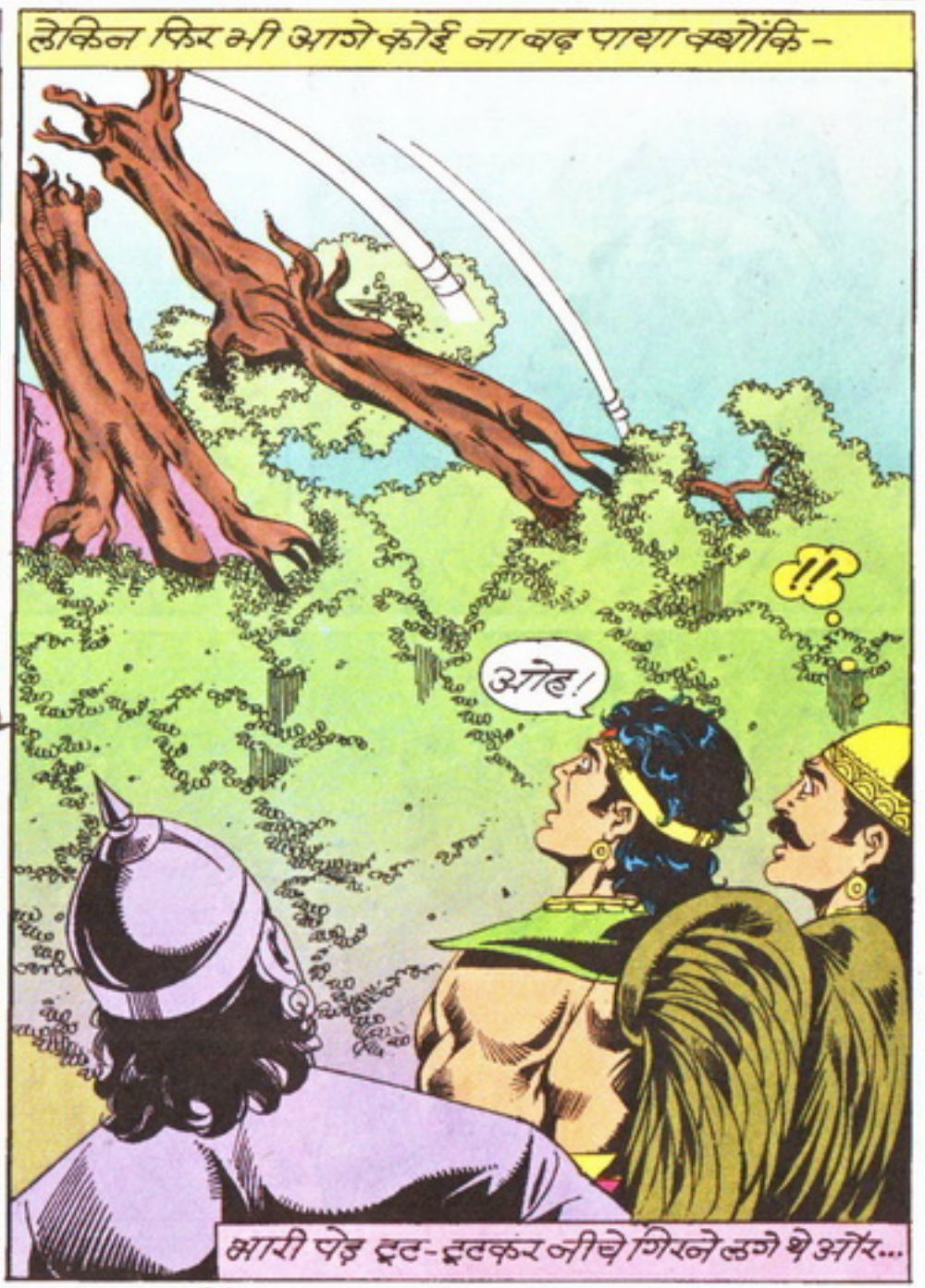
लेकिन फिर भी आगे कोई ना बढ़ पाया क्योंकि -
!!
ओह!
भारी पेड़ टूट-टूटकर नीचे गिरने लगे थे और...

...रास्ता एक बार फिर बंद हो गया-
ओह ! कोई भारी पेड़ों को फेंक-फेंककर हमारा रास्ता बंद कर रहा है !

गरज उठा मोकाल-
कौन है मोकाल की राह को रोकने का प्रयत्न करने वाला ?...
...सामने आ !

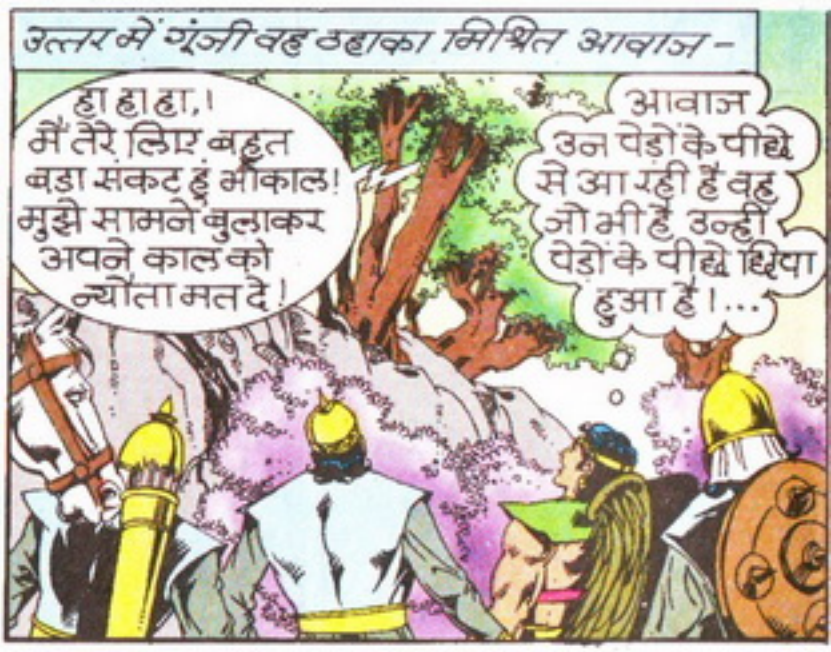
उत्तर में गूंजी वह ठहाका मिश्रित आवाज-
हा हा हा,! मैं तेरे लिए बहुत बड़ा संकट हूं मोकाल! मुझे सामने बुलाकर अपने काल को न्योता मत दे !
आवाज उन पेड़ों के पीछे से आ रही है वह जो भी है उन्हीं पेड़ों के पीछे छिपा हुआ है !...

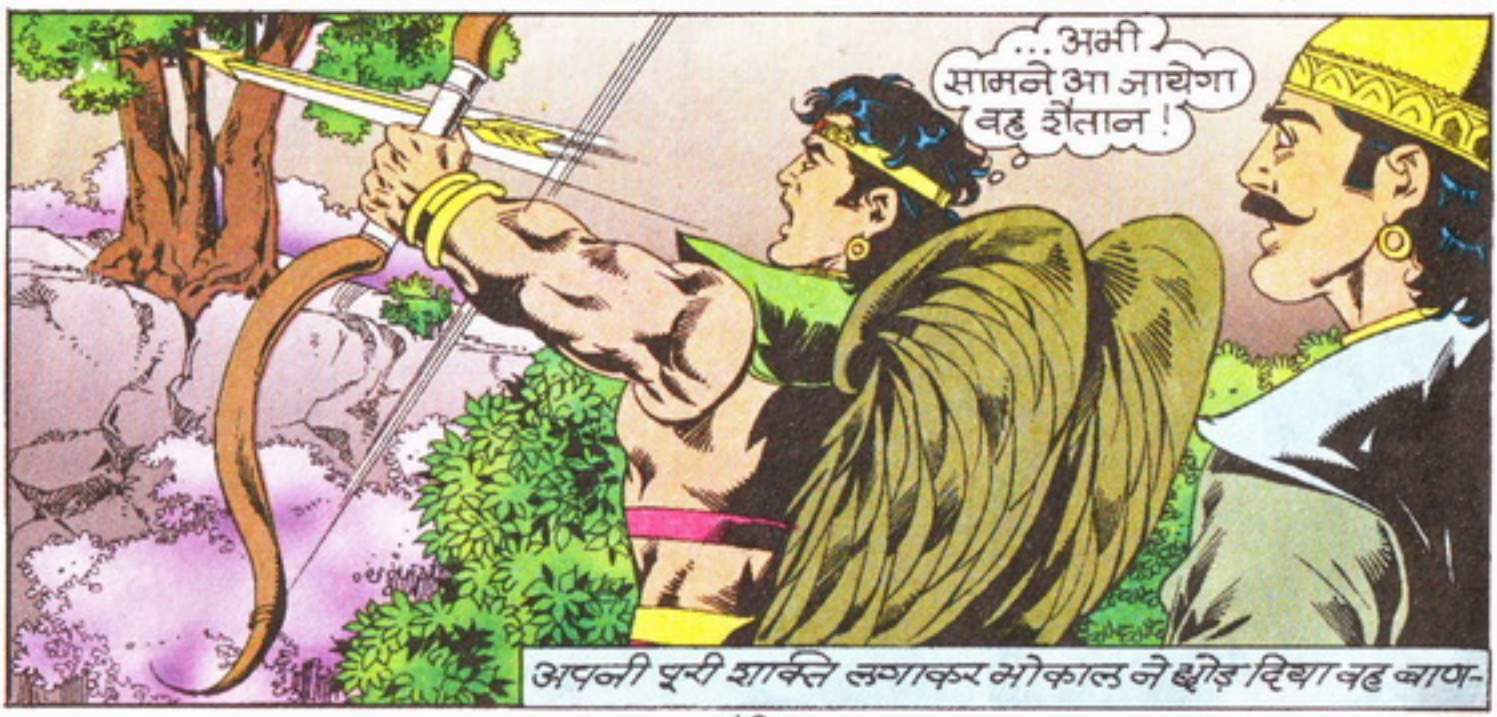
... अभी सामने आ जायेगा वह शैतान !
अपनी पूरी शक्ति लगाकर मोकाल ने छोड़ दिया वह बाण-

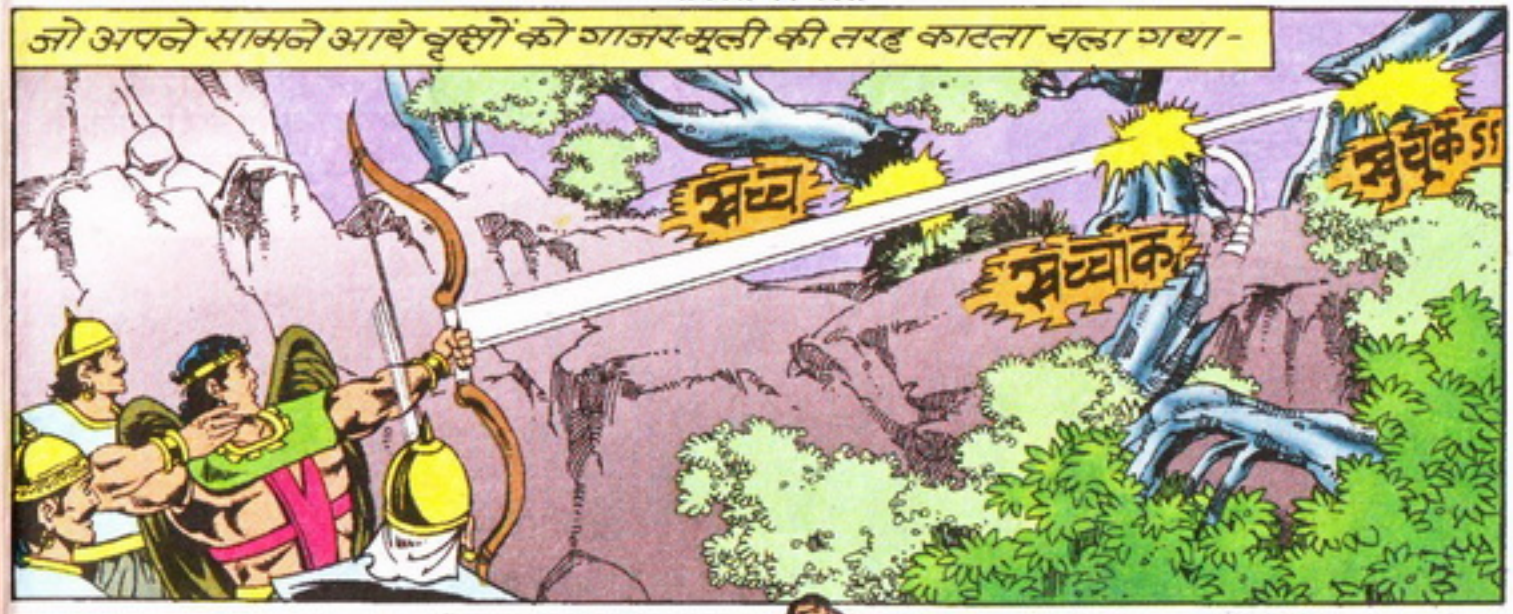
जो अपने सामने आये वृक्षों को गाजर-मूली की तरह काटता चला गया -
स्वच्च
स्वच्चक
स्वच्चक

अब सामने था रास्ता रोकने वाला -
मुझे सामने लाकर तूने अच्छा नहीं किया भोकाल, क्योंकि मैं वो शक्ति हूं जिससे युद्ध करने के लिए भगवान श्रीराम को भी वृक्षों की ओट लेनी पड़ी थी!

रामायण काल का परम शक्तिशाली योद्धा बाली!

और फिर अगले ही क्षण उसके मुख से निकला वह नाम -
छद्म
सही पहचाना भोकाल! छद्म हूं मैं! बाली के रूप में?

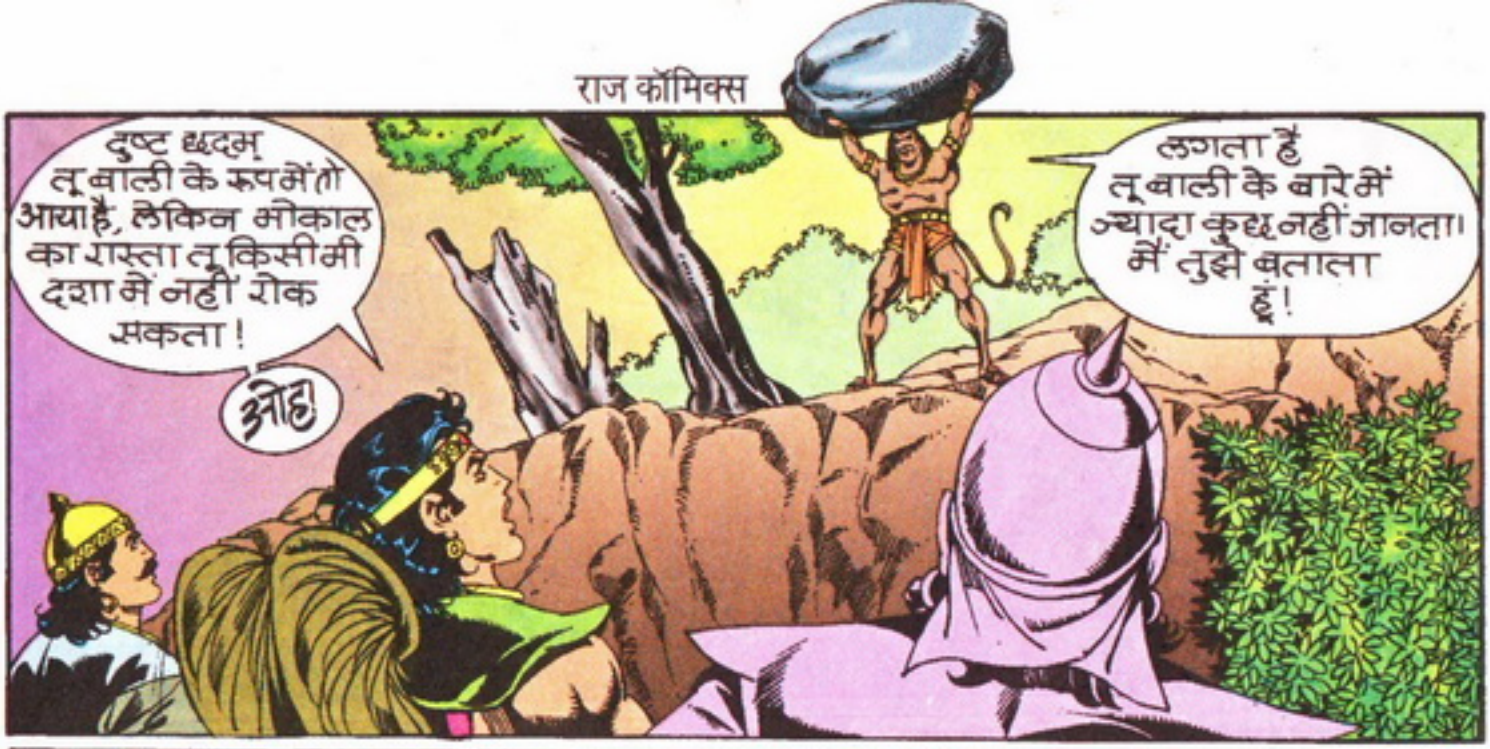
दुष्ट बुद्धम्
तू बाली के रूप में तो आया है, लेकिन मोकाल का रास्ता तू किसी भी दशा में नहीं रोक सकता!
ओह
लगता है तू बाली के बारे में ज्यादा कुछ नहीं जानता। मैं तुझे बताता हूं!

रावण जैसे अपार, अमर शक्तिशाली योद्धा को छः महीने तक अपनी कांख में दबा-कर रखा था उसने...
...और उसकी सबसे बड़ी शक्ति थी कि...

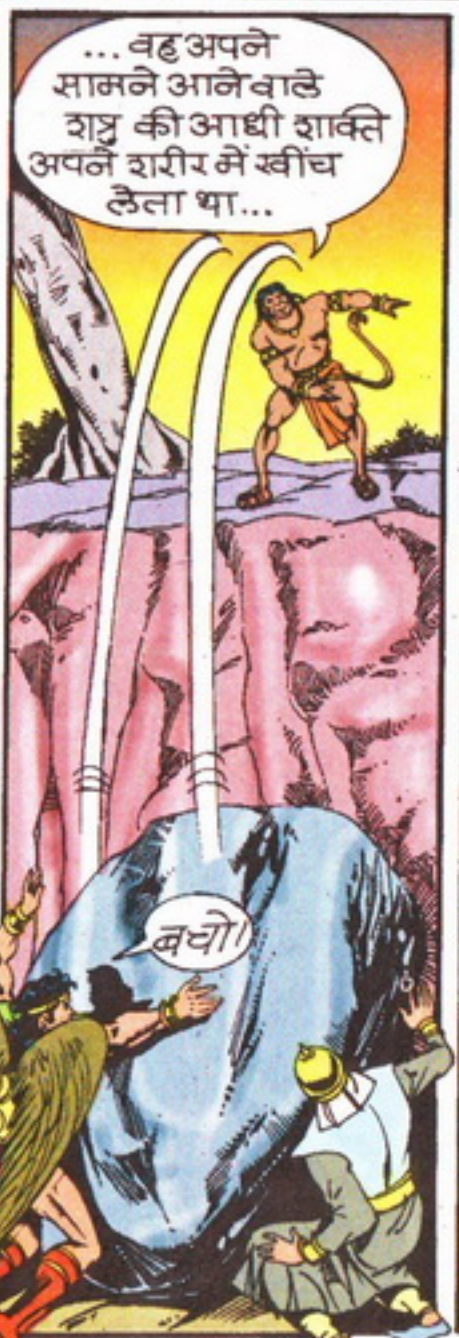
...वह अपने सामने आने वाले शत्रु की आधी शक्ति अपने शरीर में खींच लेता था...
बचो

...तेरी भी आधी शारीरिक शक्ति धीरे-धीरे मेरे शरीर में समाती जा रही है!
ओह! इसी लिए मेरे शरीर में एकाएक दुर्बलता आती जा रही है जबकि...
अपनी शक्ति के साथ वह मेरी शक्ति का भी स्वामी बन गया है!...

...उसे शीघ्र ही समाप्त नहीं किया तो यह मुझे समाप्त कर देगा!
ओफ्फ!
तेरी ये ढाल और तलवार तुझे हराने नहीं देंगे इसलिए...

...उचित यही है कि पहले इन्हें तेरे हाथों से छुड़ाया जाये!...
धड़ाक

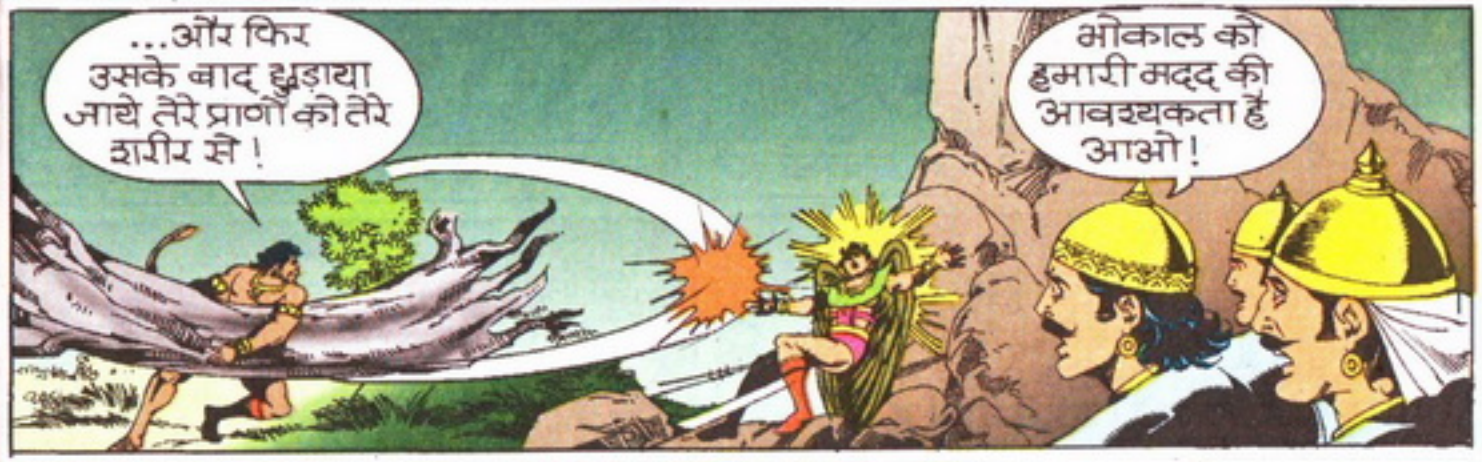
...और फिर उसके बाद छुड़ाया जाये तेरे प्राणों को तेरे शरीर से!
भोकाल को हमारी मदद की आवश्यकता है आओ!

आह ह...
आओ और आओ!
आहह
धोड़
धड़ाक

रुक जाओ, तुम बाली का कुछ नहीं बिगाड़ सकते! उल्टे उसके सामने पड़कर तुम उसकी शक्ति को और अधिक बढ़ाओगे!

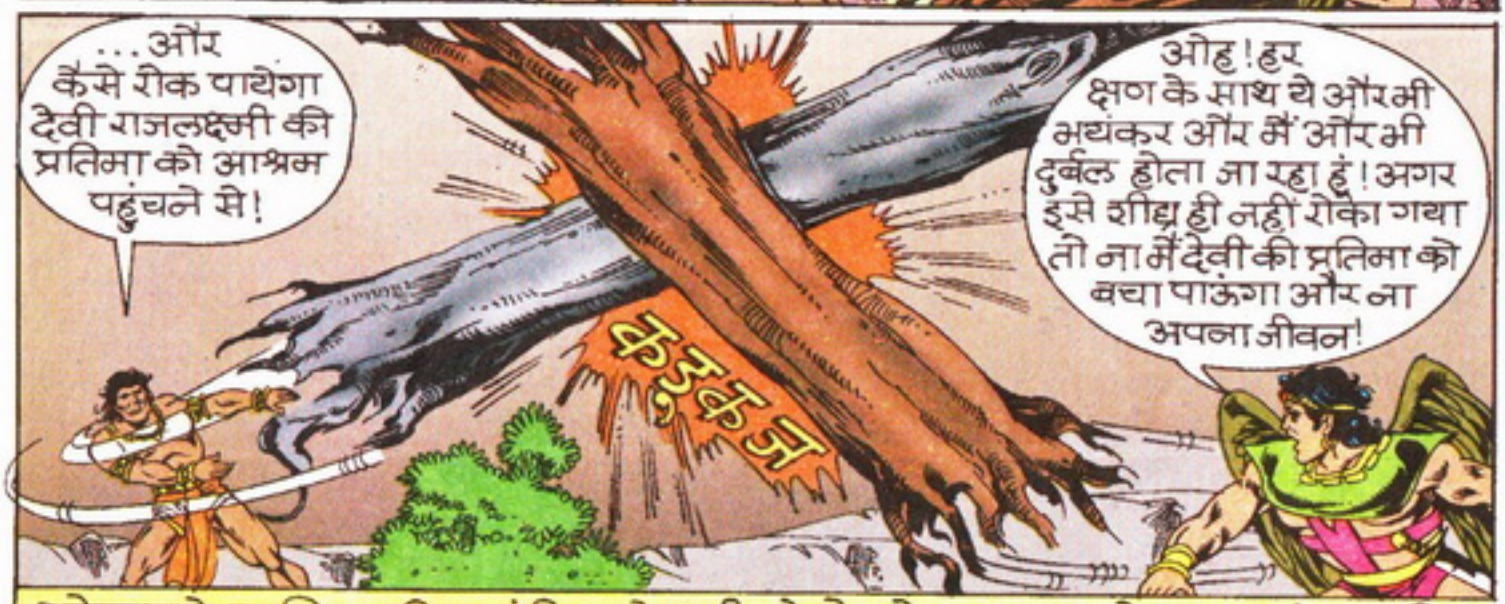
...और कैसे रोक पायेगा देवी राजलक्ष्मी की प्रतिमा को आश्रम पहुंचने से!
ओह! हर क्षण के साथ ये और भी भयंकर और मैं और भी दुर्बल होता जा रहा हूं! अगर इसे शीघ्र ही नहीं रोका गया तो ना मैं देवी की प्रतिमा को बचा पाऊंगा और ना अपना जीवन!
कड़ड़क

ओकाल के मस्तिष्क की हर तंत्रिका ने बाली को रोकने का उपाय सोचना आरंभ कर दिया...

कहानी 19 पेज से जारी

...साथ में पारदर्शी भी है ताकि इससे आसानी से लड़ा जा सके! और दिया जा सके... इसके वारों का...
...प्रत्युत्तर!
भड़ाक
मेरी खोई शक्ति वापस लौट आई!
सामने वाले के शरीर की तरंगें तेरे शरीर से टकराती हैं तभी तू उसकी आधी शक्ति खींचने में सफल हो पाता है! इस अभेद्य पारदर्शी ओट से मैंने वह रास्ता बंद कर दिया है बाली...
भड़ाक
...अब देखता हूं तुझमें कितनी शक्ति है!..

... रावण की कांख में दबा लेने वाली भुजाओं में कितना बल है...
... और तू कितना बड़ा योद्धा है!
कड़कड़ड़
मेरे ये प्रहार तुझे बता देंगे बाली कि अन्याय और पाप को हर युग में हारना पड़ता है!

...कभी भगवान श्रीराम के हाथों और कभी...
...उनकी प्रेरणा और उनके आशीर्वाद पाये भोकाल जैसे उनके भक्तों के हाथों !
सीधा काल के गाल में गिरेगा जाकर।
उसका काल पुकार रहा था तभी तो वह हमारे महाबली से टकराने आया था!
देवी राजलक्ष्मी की प्रतिमा पर मंडराता संकट समाप्त हुआ। आगे बढ़ो, हमें देवी आशीर्वाद दे रही है!
भ्रम में था भोकाल--

देवी की प्रतिमा पर मंडराता संकट अभी सही-सलामत था-

भीम का रूप धारण करने के पश्चात भी जब मैं भोकाल से हार गया तो मैंने अनुमान लगाया कि असीमित हैं भोकाल की शक्तियां! इसलिए मैंने बाली का रूप धरकर उसकी आद्यी शक्ति प्राप्त करने और उसे हराने का निर्णय लिया था परन्तु...

...मुझे खेद हैं गुरूमाता कि मैं बाली के रूप में भी उससे पराजित हो गया!

भीम के रूप में भोकाल से पराजित होने के पश्चात भी आज भोकाल की आद्यी शक्ति प्राप्त करने का तुम्हारा निर्णय मूर्खतापूर्ण था हुदम!

...तुम्हें तो उसकी सम्पूर्ण शक्ति प्राप्त करनी चाहिए थी!

गुरूमाता गुरूमुखी की बातों में छिपा अर्थ जो समझा हुदम् तो...

...शैतानी चमक उसकी आंखों में डेरा जमाती चली गई-

आपने सही कहा गुरूमाता! मैं सचमुच मूर्ख हूं! परन्तु अब मैं अपनी इस भूल को सुधारूंगा और ससम्मान आश्रम लेकर आऊंगा...

"...देवी राजलक्ष्मी की प्रतिमा-"
देवी राजलक्ष्मी की!
जय
देवी राजलक्ष्मी की जय-जयकार से मानों विकासनगर गूंज रहा था...

...गूंजता भी क्यों ना आज राजलक्ष्मी पर्व जो था और देवी की प्रतिमा पर इक्यावन नदियों का जल चढ़ाकर उसका अभिषेक जो किया जा रहा था-

और यह था उस अभिषेक का आन्तिम क्षण-
जल के इस अंतिम घड़े को अपने हाथों से देवी की प्रतिमा पर चढाकर अभिषेक अनुष्ठान को सम्पूर्ण करो महाबली!
जैसी आज्ञा महारानी!

भोकाल घड़े को अपने हाथों में उठाकर देवी की प्रतिमा के पास पहुंचा-

लेकिन जल उसने नहीं सनसनाकर पहुंचे उस तीर ने चढ़ाया--

देवी को पवित्र जल चढ़ाकर अभिषेक अनुष्ठान पूरा करने का सौभाग्य अगर भोकाल को मिला है तो...

... उसे भोकाल ही पूरा करेगा कोई बहुरूपिया नहीं!

??

अपने तीर से घड़े को फोड़कर मैंने अभिषेक अनुष्ठान और मेरे रूप में मौजूद ह्यदम नामक इस दुष्ट का खेल समाप्त कर दिया है महारानी ... इसे बंदी बनाने का आदेश दीजिए!

दूसरे भोकाल को देखकर सभी के साथ स्तब्ध खड़ी रानी मोहिनी...

... अब मानो नींद से जागी-

सैनिको! बंदी बनालो इसे!

ठहरिये महारानी!

बन्दी मुझे नहीं इसे बनवाइये क्योंकि...

ह्यदम् मैं नहीं वह है!

भोकाल मैं हूं!

उत्तर में शेरनी की भांति दहाड़ी रूपसी-

चुप रह मक्कार! हमारे पति का रूप धरकर तू महारानी और राज-दरबारियों को तो धोखा दे सकता है, परन्तु हमें नहीं क्योंकि...

...अपने पति के व्यक्तित्व दिनचर्या से अच्छी तरह परिचित हैं हम!

इसलिए हम दावे से कह सकती हैं कि हमारे पति ये हैं!

य..ये तुम्हें क्या हुआ मलोनी! रूपसी! इस छलिया के जाल में फंसकर तुम मुझे, अपने पति को पहचानने से इंकार कर रही हो और इसे अपना पति कह रही हो!

कौन छलिया है और कौन असली भोकाल-

....इसका निर्णय मेरी तलवार करेगी!

तलवार खींचकर वह जो आगे बढ़ा...

...तो गरज पड़ी रानी मोहिनी-

ठहरो! यह तो निश्चित है कि तुममें से एक छद्म है परन्तु इस समय तुम दोनों भोकाल के रूप में हो! तुममें से किसी का लहू बहे ये हमें कतई स्वीकार नहीं इसलिए...

...निर्णय हम करेंगे कि तुममें से कौन भोकाल है और कौन बहुरूपिया छद्म!

तुम दोनों अपने जीवन की महत्वपूर्ण घटनायें स्वर्गीय महाराज और हमारे साथ हुई गुप्त मंत्रणायें, अभी तक लड़े अपने सारे युद्धों का वर्णन मुझे लिखकर दो! हम उनका मिलान करके पता करेंगे कि असली भोकाल कौन है?

दोनों भोकालों ने जब रानी मोहिनी के आदेश का पालन किया तो परिणाम आश्चर्य जनक निकला-

दोनों का हर वृत्तांत एक जैसा है, हर घटना का विवरण एक जैसा है! ऐसा कैसे हुआ?

द्यूतम की सिद्धि की यही विशेषता है महारानी! वह जिसका भी रूप धरता है उसकी शक्ति, स्मरणशक्ति सहित हर चीज को धारण करता है!

अपनी सिद्धि के बारे में महारानी को बताकर अगर तू मुझे नकली साबित करने के प्रयास में है तो भूल जा तू ऐसा नहीं कर सकेगा!

ठहरो! हमारे मस्तिष्क में वास्तविकता जानने का एक उपाय आया है!

प्रहारा का प्रयोग करके तुम सिद्ध कर सकते हो कि कौन असली है, और कौन नकली?

रानी मोहिनी का वह मोहरा भी बेकार सिद्ध हुआ क्योंकि-

प्रहारा का करतब प्रदर्शन किया दोनों भोकालों ने-

लेकिन रानी मोहिनी ने अभी हार नहीं मानी थी-

अब तो भोकाल शक्ति ही निर्णय कर सकती है!

मैं इसके लिए तैयार हूं!

यही मैं चाहता था क्योंकि बाहरी शक्ति होने के कारण मैं अपनी सिद्धि से भोकाल शक्ति प्राप्त नहीं कर पाया हूं...

लेकिन मैं इस स्थिति के लिए तैयार होकर आया हूं। मैं इसी प्रतीक्षा में था कि भोकाल अपनी भोकाल शक्ति पुकारे और मैं अपनी शक्ति से उसे अपनी तरफ खींचकर हासिल करूं...

...और फिर असली भोकाल का वध करके प्रलयंकारी भोकाल शक्ति के साथ-साथ देवी राजलक्ष्मी को भी ले आऊं!

मेरी शक्ति बिना हारे भोकाल शक्ति को खींचकर मेरे पास ले आयेगी! इसका मुझे पूरा विश्वास है!

छद्दम के मनसूबों पर कुठाराघात किया भोकाल ने-

मैं इस परीक्षा के लिए तैयार नहीं

क्षमा करें महारानी! मैं आपको कारण बताने में असमर्थ हूं!

कारण?

भोकाल की बात सुनकर अचंभित रानी मोहिनी...

...दूसरे ही क्षण क्रोध से भड़क उठी-

कारण बालक भी समझ सकता है! तुम यह परीक्षा देने से इसलिए कतरा रहे हो क्योंकि तुम भोकाल हो ही नहीं, छद्दम हो!

कारण बहुत बड़ा है महारानी! छद्दम में अगर मेरी हर शक्ति धारण करने की शक्ति है तो हो सकता है वह मेरे भोकाल बोलते ही भोकाल शक्ति को अपनी तरफ खींच ले!

रानी मोहिनी के सख्त स्वर ने भोकाल का ध्यान अपनी तरफ खींचा—

तुम्हारी यह सोच-विचार की स्थिति तुम्हारे रूप की वास्तविकता सामने ले आई है छद्दम इसलिए...

...मरने के लिए तैयार हो जाओ!

!!

तीरंदाज सैनिकों के तीर भोकाल की तरफ तन चुके थे-

और काल भोकाल के सिर पर मंडरा रहा था-

अब देर थी तो बस रानी मोहिनी के हाथ के एक इशारे भर की-

लेकिन रानी वह इशारा कर पाती उससे पहले ही कठोर होता चला गया भोकाल का चेहरा-

मैं एक अनर्थ रोकना चाहता था महारानी, परन्तु लगता है महागुरू की यही इच्छा है कि यह अनर्थ हो!

!!

दूसरे ही क्षण चीख उठा भोकाल-

भोऽऽकाऽऽल भोऽऽकाऽऽल

भोकाल के साथ ही खदम ने भी पुकारा था वह नाम-

इसी के साथ प्रकट हुई भोकाल शक्ति, लेकिन किसी के शरीर में नहीं हवा में-

खदम की कला का इससे बड़ा कमाल और क्या हो सकता था कि भोकाल शक्ति भी भ्रमित हो गई थी-

हर कोई दम साधे देख रहा था बीचमें स्थिर उस भोकाल शक्ति को जिसने करना था वह निर्णय जो शायद ब्रह्माण्ड का सबसे बड़ा निर्णय था!

मेरी शक्ति धीरे-धीरे भोकाल शक्ति को मेरी तरफ खींच रही है! कुछ ही क्षणों में भोकाल शक्ति मुझमें समा जायेगी और ताकता रह जायेगा...

...भोकाल!
अरे!
ह्रदम की हर शक्ति को मात करती भोकाल शक्ति उस भोकाल के शरीर में जा समाई...

...जो उसका सच्चा हकदार था!
जय महागुरू भोकाल!
फैसला हो चुका था असली भोकाल भोकाल शक्ति के साथ शान से खड़ा था!

जबकि भोकाल का रूप धरने वाला ह्रदम खड़ा था सैनिकों से घिरा हुआ-
डाल दो इस बहुरूपिये को ऐसी काल कोठरी में जहां इसे रूप बदलने के लिए औरों की क्या अपनी सूरत भी ना दिखाई दे!

काल कोठरी का अंधेरा ह्रदम की सिद्धियों को निगल नहीं सकता महारानी! शीघ्र ही मैं उस अंधेरे को चीरकर बाहर निकल आऊंगा! और जिस दिन ऐसा हो गया...

...उस दिन देवी राजलक्ष्मी की प्रतिमा को मेरी गुरूमाता के पास पहुंचने से भोकाल क्या, भगवान भी नहीं बचा सकता!

समाप्त...